**Ensure mositure at Panicle initiation stage: NEFORD**
Dainik Jagran, September 15, 2014

दैनिक जागरण वाराणसी, 15 सितंबर 2014 मऊ जागरण

# बालियां आने पर नमी का रखा जाए ध्यान

खेती की बातें

♦ बाली निकलने के बाद न छिड़कें यूरिया : उपनिदेशक

मऊ : धान की अगेती व मध्यम प्रजाति की फसलों में बालियां निकलने का समय आ रहा है। ऐसे में खेतों में नमी बनाए रखना नितांत आवश्यक है। थोड़ी सी लापरवाही की दशा में पैदावार प्रभावित हो सकती है। जिन फसलों में बालियां निकल गई हैं। उस प्रक्षेत्र में यूरिया का छिड़काव कदापि न करें। यह सलाह है उपकृषि निदेशक डॉ. आशुतोष मिश्र की।

खेती के संदर्भ में उन्होंने कहा कि खेती के लिए प्रतिकूल हुए मौसम में अपनी गाढ़ी लागत को बचाने के लिए किसान खरीफ की मुख्य फसल धान में नमी बनाए रखें। शाम को पानी चलाने के साथ ही यूरिया का छिड़काव करें। सुबह या दोपहर में इसका प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिए। घास व रोग नियंत्रण में प्रयोग की जाने वाली दवाओं में व्यापक सावधानी बरतने की जरूरत है। बालियां निकलते समय पानी की कमी से फसल के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इसके साथ ही दानों के वजन पर भी इसका असर पडेगा। बालियां निकलते समय घास प्रबंधन के लिए मजदूर कदापि नहीं लगाना चाहिए। इससे दानों में लगे हुए सफेद भुआं झड़ जाते हैं। ऐसे में खेतों में जकड़ी घास नियंत्रण के लिए डिस्पाइरी बैक सोडियम 75 से 80 एमएल की मात्रा 100 लीटर पानी में मिलाकर प्रति बीघा की दर से छिड़काव करना श्रेयकर होता है।

## स्टीकर का करें प्रयोग

डॉ. मिश्र ने बताया कि दवा एवं घास नियंत्रण के लिए इस्तेमाल करने वाली दवाओं में स्टीकर मिलाकर ही छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि दवा बनने से पूर्व निर्धारित मात्रा के पानी में डिटरजेंट पाउडर या शैंपू डालने से चिपचिपापन बना रहता है। इससे दवा पत्तियों पर चिपक कर सीधे असर करती है।

**ताल सूखे, खिसक रहा भूगर्भ जल-मऊ** : अपेक्षित बारिश नहीं होने से इसका असर सभी वर्गों पर पड़ रहा है। एक तरफ किसानों में त्राहि-त्राहि मची है, वहीं पशु-पक्षी भी पीने के पानी के लिए बेहाल है। सितंबर माह में भी अभी तक ताल-तलैयों में धूल ही उड़ रही है। बरसात नहीं होने से भूगर्भ जल भी नीचे खिसक रहा है। जून, जुलाई, अगस्त एवं सितंबर तक बरसात का इंतजार रहता है। इस बार अपेक्षा से भी कम बारिश हुई। इससे किसानों की फसल तो खेतों में ही सूख चुकी है। आज आलम यह है कि नहरों में भी पानी की एक बूंद नहीं छलकी। इससे जनपद के अधिकतर ताल-तलैए सूखे ही पड़े हैं। किसान इस बात को लेकर परेशान है कि आगे भी यही हाल रहा तो हालात काफी भयावह होंगे।

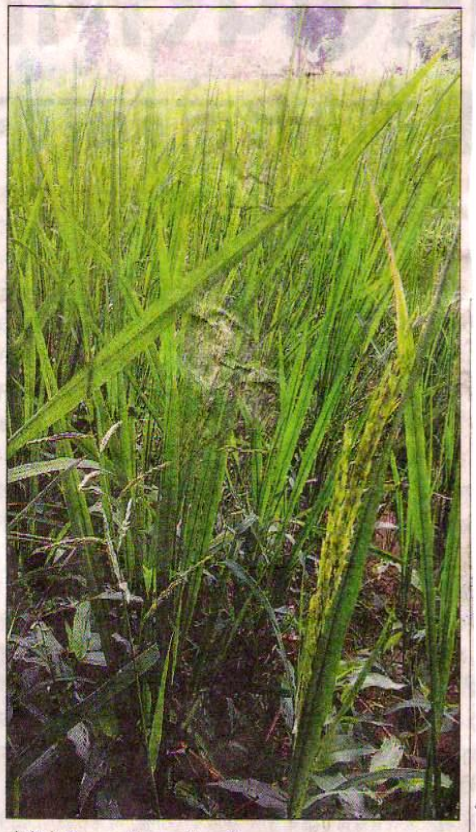

खेतों में निकल रही धान की बाली।

## नहर बेपानी, किसान परेशान

**चिरैयाकोट (मऊ)** : स्थानीय क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बनाई गई शारदा सहायक नहर की आजमगढ़ राजवाहा में पानी नहीं आने से किसान परेशान हैं। सितंबर माह तक पानी नहीं आने से किसानों की धान की फसल सूख चुकी है। ऐसे में अब किसान अपनी अगली फसल को लेकर चिंतित हैं।

क्षेत्रीय किसान बबलू सिंह, रमेश कहते है कि यह नहर अब किसानों के लिए कोढ़ बन चुकी है। कई वर्षों से पानी नहीं आने के चलते किसानों की फसल प्रतिवर्ष बर्बाद हो रही है। फिर भी प्रशासन किसानों की समस्याओं को दरकिनार कर रहा है। क्षुब्ध किसान नहर की स्थिति को लेकर आंदोलन करने काम मन बना रहे हैं।